

पद २८४

(रागः परज - तालः त्रिताल)

सखि सावन नहि पियरबा नगीच ॥ध्रु.॥ झिलमिल झिलमिल
मेहा बरसे । अंगनमे हो गयी कीच । घडिघडि पल छन बिजली
चमके । देखत अखियां मीच ॥१॥ पूर्व देशसे पवन चलत है ।
बादल भर गयी नीच । मानिक कहे अब नाव परी है । गंगा-
जमुना बीच ॥२॥